अमीरे अहले सुन्नत की किताब ''आशिक़ाने रसूल की 130 हिकायात मअ़ मक्के मदीने की ज़ियारतें'' से लिये गए मवाद की दूसरी क़िस्त

Khake Madina Ki Barkaten (Hindi)

ख़ाके मदीना की बरकतें

कुल सफ़हात 28

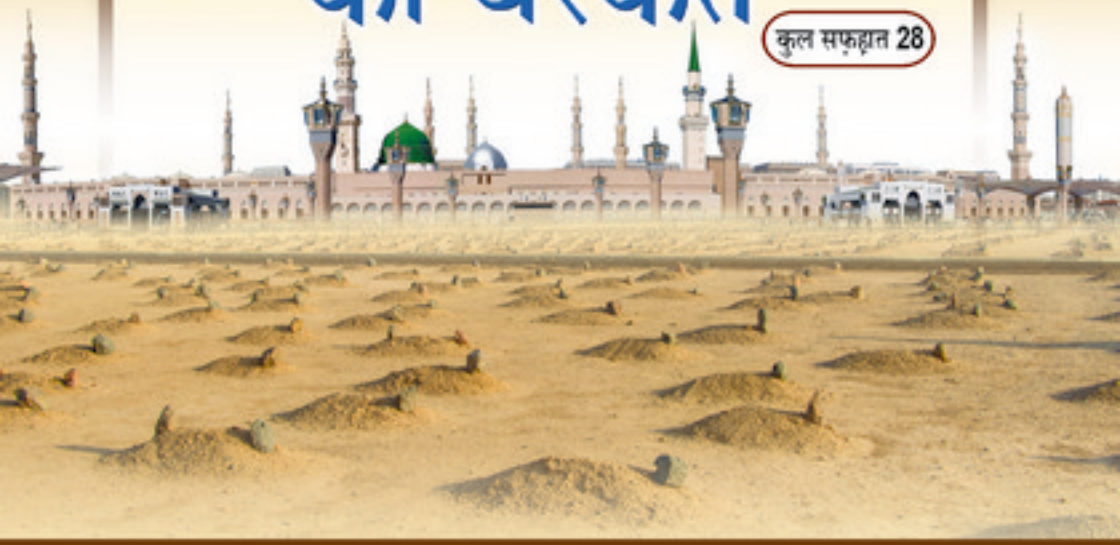

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ख़ाके मदीना की बरकतें

येह रिसाला (**ख़ाके मदीना की बरकतें**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की
मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hindibook@dawateislamihind.net

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

येह मज़्मून ''आशिक़ाने रसूल की 130 हि़कायात'' के सफ़ह़ा 40 ता 67 से लिया गया है।

ख़ाके मदीना की बरकतें

दुआ़ए अ़त्तार

या रब्बल मुस्त़फ़ा ! ''ख़ाके मदीना की बरकतें'' (रिसाला) के 28 सफ़ह़ात जो कोई पढ़ या सुन ले उस को ख़ाके मदीना के ज़र्रे ज़र्रे से वालिहाना मह़ब्बत इनायत फ़रमा ईमान व आ़फ़िय्यत के साथ ख़ाके मदीना पर उस को मौत और ख़ाके मदीना में मदफ़न नसीब कर। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते अ़ल्लामा **मजदुद्दीन फ़ीरोज़ आबादी** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से **मन्क़ूल** है : जब किसी मजलिस में (या'नी लोगों में) बैठो और कहो بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم وَصَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد तो **अल्लाह** पाक तुम पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो तुम को **ग़ीबत** से बाज़ रखेगा। और जब मजलिस से उठो तो कहो : بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم وَصَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد तो फ़िरिश्ता लोगों को तुम्हारी **ग़ीबत** करने से बाज़ रखेगा। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیع ص۲۷۸)

मश्हूर आ़शिक़े रसूल इमाम मालिक की 12 हि़कायात

मदीने में नंगे पाऊं

करोड़ों मालिकियों के अ़ज़ीम पेशवा **ह़ज़रते** सय्यिदुना

www.dawateislami.net

इमाम मालिक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق ज़बरदस्त आशिक़े रसूल थे, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **मदीनए पाक** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की गलियों में नंगे पैर चला करते थे। (الطبقاتُ الکُبریٰ لِلشَّعرانی الجزء الاول ص ٧٦)

हर रात दीदारे सरवरे काइनात

ह़ज़रते सय्यिदुना मुसन्ना बिन सईद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد का बयान है : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق फ़रमाते थे : कोई रात ऐसी नहीं गुज़री मैं ने जिस में ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत न की हो। (ह़िल्यतुल औलिया, जि. 6, स. 346)

मिट जाए येह ख़ुदी तो वोह जल्वा कहां नहीं
दर्दा मैं आप अपनी नज़र का ह़िजाब हूं

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मदीने में सुवारी से परहेज़

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं : मैं ने मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम मालिक** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق के दरवाज़े पर ख़ुरासान या मिस्र के घोड़े बंधे देखे जो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को बतौरे हदिय्या (GIFT) पेश किये गए थे, इस क़दर आ'ला घोड़े मैं ने कभी न देखे थे। चुनान्चे, मैं ने अ़र्ज़ की : "येह घोड़े कितने उ़म्दा हैं !" फ़रमाया : "मैं येह सब आप को तोह़फ़े में देता हूं।" मैं ने अ़र्ज़ की : "एक घोड़ा अपने लिये तो रख लीजिये।" फ़रमाया : "मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या आती है कि उस मुबारक ज़मीन को अपने घोड़े के क़दमों तले

www.dawateislami.net

रोन्दूं जिस में उस के प्यारे पयम्बर, बीबी आमिना के दिलबर, मदीने के ताजवर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मौजूद हैं या'नी आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का रौज़ए अन्वर है।" (احیاء العلوم ج ۱ ص۴۸،الروض الفائق ص۲۱۷)

हां हां रहे मदीना है, ग़ाफ़िल ज़रा तो जाग
ओ पाऊं रखने वाले येह जा चश्मो सर की है

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ज़िक्रे नबी صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के वक़्त रंग बदल जाता

ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق के इश्क़े रसूल का आ़लम येह था कि जब उन के सामने नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र किया जाता तो उन के चेहरे का रंग बदल जाता और वोह ज़िक्रे मुस्त़फ़ा की ता'ज़ीम के लिये ख़ूब झुक जाते। एक दिन आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इस बारे में पूछा गया तो फ़रमाया : "अगर तुम वोह देखते जो मैं देखता हूं तो इस बारे में सुवाल न करते।" **(الشفاء ج۲، ص ۴۱ ۔ ۴۲)**

जान है इश्क़े मुस्त़फ़ा रोज़ फ़ुज़ू करे ख़ुदा
जिस को हो दर्द का मज़ा नाज़े दवा उठाए क्यूं

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दर्से ह़दीसे पाक का अन्दाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق (ने 17 बरस की उ़म्र में दर्से ह़दीस देना शुरूअ़ किया) जब अह़ादीसे मुबारका सुनानी होती (तो गुस्ल करते), चौकी (मस्नद) बिछाई जाती और आप उ़म्दा लिबास ज़ैबे तन फ़रमा कर ख़ुश्बू लगा कर निहायत आ़जिज़ी के साथ अपने हुजरए मुबारका से बाहर तशरीफ़ ला कर उस पर बा अदब बैठते (दर्से ह़दीस के दौरान कभी पहलू न बदलते) और जब तक उस मजलिस में ह़दीसें पढ़ी जातीं अंगेठी में ऊ़द व लूबान सुलगता रहता। (بُسْتَانُ الْمُحَدِّثِين ص ١٩، ٢٠)

अ़म्बर ज़मीं अ़बीर हवा मुश्क तर गुबार !

अदना सी येह शनाख़्त तेरी रहगुज़र की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बिच्छू ने 16 डंक मारे मगर दर्से ह़दीष जारी रखा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह **इमाम मालिक** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق दर्से ह़दीस दे रहे थे कि **बिच्छू** ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को 16 मरतबा डंक मारे। दर्द की शिद्दत से चेहरए मुबारक ज़र्द (या'नी पीला) पड़ गया मगर दर्से ह़दीस जारी रखा। (और पहलू तक न बदला) जब दर्स ख़त्म हुवा और लोग चले गए तो मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! आज मैं ने आप में एक अ़जीब बात देखी ! आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : हां ! मगर मैं ने ह़दीसे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम की बिना पर सब्र किया। (الشفاء ج٢ ص٤٦)

www.dawateislami.net

ऐसा गुमा दे उन की विला में ख़ुदा हमें
ढूंन्डा करे पर अपनी ख़बर को ख़बर न हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अह़ादीस के अवराक़ पानी में डाल दिये मगर...

आ़शिक़े मदीना हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق ने फ़न्ने ह़दीस की बा क़ाइदा मुरत्तब किताब सब से पहले मुदव्वन (या'नी मुरत्तब) फ़रमाई जो कि **मोअत्त़ा इमाम मालिक** के नाम से मशहूर है। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ख़ुलूस के पैकर थे। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुह़म्मद अ़ब्दुल बाक़ी ज़रक़ानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورَانِی नक़्ल करते हैं : **इमाम मालिक** जब "मोअत्त़ा" की तसनीफ़ से फ़ारिग़ हुए तो उन्हों ने अपना **इख़्लास** साबित करने के लिये **मोअत्त़ा** के मुसव्वदे के तमाम अवराक़ (papers) पानी में डाल दिये और फ़रमाया : "अगर इन में से एक वरक़ भी भीग गया तो मुझे इस की कोई ह़ाजत नहीं है।" लेकिन येह ह़ज़रते इमाम मालिक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق की सिद्क़ निय्यत और इख़्लास का समरा था कि एक वरक़ भी न भीगा। (شرح الزرقانی علی المؤطاء ج۱ ص ۳۶ ملخصًا)

बना दे मुझ को इलाही ख़ुलूस का पैकर
क़रीब आए न मेरे कभी रिया या रब्ब

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

इश्के़ रसूल में रोने वाले मोहद्दिस की क़द्रदानी

हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق से किसी ने (आप के उस्ताज़े मोहतरम) हज़रते सय्यिदुना अय्यूब सख़्तियानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورَانِی के बारे में पूछा तो फ़रमाया : मैं जिन हज़रात से अहादीसे मुबारका रिवायत करता हूं वोह उन सब में अफ़्ज़ल हैं, मैं ने उन्हें दो मरतबा **सफ़रे हज** में देखा कि जब उन के सामने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم का ज़िक्रे अन्वर होता तो वोह इतना रोते कि मुझे उन पर रहम आने लगता। जब मैं ने ता'ज़ीमे मुस्तफ़ा और इश्के़ रसूल का येह आलम देखा तो मुतअस्सिर हो कर उन से हदीस रिवायत करना शुरूअ की। (الشفاء ج ۲ ص ۴۱)

यादे नबिय्ये पाक में रोए जो उम्र भर
मौला मुझे तलाश उसी चश्मे तर की है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ाके मदीना की तौहीन करने वाले के लिये सज़ा

हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق के सामने किसी ने येह कह दिया कि ''मदीने की मिट्टी ख़राब है'' येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़तवा दिया कि इस गुस्ताख़ को तीस दुर्रे लगाए जाएं और क़ैद में डाल दिया जाए। (ऐज़न स. 57)

जिस ख़ाक पे रखते थे क़दम सय्यिदे आलम
उस ख़ाक पे कुरबां दिले शैदा है हमारा

(हदाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

क़ज़ाए ह़ाजत के लिये ह़रम से बाहर जाया करते

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق ने ता'ज़ीमे ख़ाके मदीना की ख़ातिर मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में कभी भी क़ज़ाए ह़ाजत नहीं की, इस के लिये हमेशा ह़रमे मदीना से बाहर तशरीफ़ ले जाते थे, अलबत्ता ह़ालते मरज़ में मजबूर थे। (بستان المحدثين ص١٩)

ऐ ख़ाके मदीना तू ही बता किस त़रह़ पाऊं रखूं यहां
तू ख़ाके पा सरकार की है आंखों से लगाई जाती है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मस्जिदे नबवी में आवाज़ धीमी रखो

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق से मस्जिदुन्नबविय्यिशरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में गुफ़्तगू के दौरान ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र ने आवाज़ बुलन्द की तो उस से फ़रमाया : ऐ ख़लीफ़ा ! इस मस्जिद में आवाज़ बुलन्द मत करो, **अल्लाह** तआ़ला ने बारगाहे रिसालत में आवाज़ें धीमी रखने वालों की मद्ह़ (या'नी ता'रीफ़) फ़रमाई है, चुनान्चे पारह 26 सूरतुल हुजुरात की तीसरी आयते मुबारका में फ़रमाया :

إِنَّ الَّذِينَ يَغُضُّونَ أَصْوَاتَهُمْ عِندَ رَسُولِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ لِلتَّقْوَىٰ ۚ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٣﴾

(پ٢٦، الحجرات:٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं **रसूलुल्लाह** के पास, वोह हैं जिन का दिल **अल्लाह** ने परहेज़गारी के लिये परख लिया है उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है।

जब कि आवाज़ें बुलन्द करने वालों की इन अल्फ़ाज़ में मज़म्मत बयान फ़रमाई है, चुनान्चे इसी सूरत की चोथी आयते करीमा है :

إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِن وَرَاءِ الْحُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٤﴾ (پ٢٦، الحجرات:٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो तुम्हें हुजरों के बाहर से पुकारते हैं इन में अकसर बे अ़क्ल हैं।

ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़तो हुर्मत यक़ीनन आज भी इसी त़रह़ है जिस त़रह़ ह़याते ज़ाहिरी में थी। इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق की इस गुफ़्तगू से अबू जा'फ़र ख़ामोश हो गया। (الشفاء ج٢ ص ٤١)

तुझ से छुपाऊं मुंह तो करूं किस के सामने
क्या और भी किसी से तवक़्क़ोअ़ नज़र की है

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

रौज़ए रसूल की त़रफ़ मुंह कर के दुआ़ मांगो

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق से ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र मन्सूर ने दर्याफ़्त किया कि मैं (रौज़ए अन्वर पर ह़ाज़िरी के मौक़अ़ पर) क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के दुआ़ मांगू या नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ रुख़ रखूं ? ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق ने फ़रमाया : नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से तुम क्यूंकर मुंह फैर सकते हो ? हु़ज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तो बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तुम्हारे और तुम्हारे वालिदे गिरामी ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये भी वसीला हैं, तुम नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ही की त़रफ़ मुंह कर के शफ़ाअ़त की भीक मांगो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त ज़रूर क़बूल फ़रमाएगा, **अल्लाह** रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ ख़ुद ही इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَ اسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿۶۴﴾

(پ٥،النساء:٦٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ मह़बूब ! तुम्हारे हु़ज़ूर ह़ाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआ़फ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं ।

(الشفاء ج٢ص ٤١)

मुजरिम बुलाए आए हैं "جَاءُوْكَ" है गवाह
फिर रद हो कब येह शान करीमों के दर की है

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जिस से हो सके वोह मदीने शरीफ़ में मरे

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "مَنِ اسْتَطَاعَ أَنْ يَّمُوْتَ بِالْمَدِيْنَةِ فَلْيَمُتْ بِهَا فَإِنِّي أَشْفَعُ لِمَنْ يَّمُوْتُ بِهَا" या'नी जो मदीने में मर सके वोह वहीं मरे क्यूंकि मैं मदीने में मरने वालों की शफ़ाअ़त करूंगा ।" (ترمذی ج ۵ ص ۴۸۳ حدیث ۳۹۴۳)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ज़ाहिर येह है कि येह बिशारत और हिदायत सारे मुसलमानों को है न कि सिर्फ़ मुहाजिरीन को या'नी जिस मुसलमान की निय्यत मदीनए पाक में मरने की हो वोह कोशिश भी वहां ही मरने की करे कि खुदा (عَزَّ وَجَلَّ) नसीब करे तो वहां ही क़ियाम करे ख़ुसूसन बुढ़ापे में और बिला ज़रूरत मदीनए पाक से बाहर न जाए कि मौत व दफ़्न वहां का ही नसीब हो, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ दुआ़ करते थे कि "मौला ! मुझे अपने मह़बूब के शहर में शहादत की मौत दे ।" आप की दुआ़ ऐसी क़बूल हुई कि سُبْحٰنَ اللّٰه फ़ज्र की नमाज़, मस्जिदे नबवी, मेह़राबुन्नबी, मुसल्लए नबी, और वहां शहादत । मैं ने बा'ज़ लोगों को देखा कि तीस चालीस साल से मदीनए मुनव्वरा में हैं, हुदूदे

www.dawateislami.net

मदीना बल्कि शहरे मदीना से भी बाहर नहीं जाते इसी ख़त़रे से कि मौत बाहर न आ जाए, **ह़ज़रते इमाम मालिक** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق का भी येही दस्तूर रहा। (मिर्आतुल मनाजीह़, जि. 4, स. 222)

मदीने में वफ़ात, ब वक़्ते रुख़्सत नेकी की दा'वत

सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق की वफ़ात 179 हि. के माहे सफ़रुल मुज़फ़्फ़र या रब्बीउ़ल अव्वल शरीफ़ की 10 या 11 या 14 तारीख़ को मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में हुई और जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न हुए। ब वक़्ते रिह़लत आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने **नेकी की दा'वत** दी। सय्यिदुना यह़्या बिन यह़्या मस्मूदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं: सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق बयान करते हैं कि सय्यिदुना रबीअ़ा ने फ़रमाया: ''मेरे नज़्दीक किसी शख़्स को नमाज़ के मसाइल बताना रूए ज़मीन की तमाम दौलत सदक़ा करने से बेहतर है और किसी शख़्स की दीनी उल्झन दूर कर देना **सो ह़ज** करने से अफ़्ज़ल है।'' नीज़ सय्यिदुना **इब्ने शहाब ज़ोहरी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के ह़वाले से बताया कि उन्हों ने फ़रमाया: ''मेरे नज़्दीक किसी शख़्स को दीनी मश्वरा देना **सो ग़ज़्वात** में जिहाद करने से बेहतर है।'' सय्यिदुना यह़्या बिन यह़्या رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं: इस गुफ़्त्गू के बा'द सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق ने कोई बात नहीं की और अपनी जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द कर दी। (बोस्तानुल मुह़द्दिसीन, स. 38-39)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तयबाह में मर के ठन्डे चले जाओ आंखें बन्द
सीधी सड़क येह शहरे शफ़ाअ़त नगर की है

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعالٰی علٰی محمَّد

मह़बूब को मनाने के निराले अन्दाज़

किसी ने **मह़मूद ग़ज़नवी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی को ह़ाज़िरिये मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا के दौरान मस्जिदुन्नबविय्यिशरीफ़ عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में फ़क़ीराना लिबास पहने, कन्धे पर मश्कीज़ा उठाए ज़ाइरीने ह़रम को पानी पिलाते देख कर कहा : क्या आप ग़ज़नी के शहनशाह नहीं ? येह क्या ह़ाल बना रखा है ? जवाब दिया : मैं शहनशाह हूं मगर ग़ज़नी में, इस दरबार में तो शहनशाह भी फ़क़ीर व गदा होते हैं। पूछने वाले को येह दीवानगी भरा जवाब बहुत ही प्यारा लगा। कुछ देर बा'द उस ने देखा कि **मिस्र का शहनशाह** शाही कर्रो फ़र और रो'बदाब के साथ चला आ रहा है, उस शख़्स ने बढ़ कर कहा : "आप ने इतनी बड़ी जसारत की ! मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की ह़ाज़िरी और येह शाही दबदबा !" जो जवाब मिस्री शहनशाह ने दिया वोह भी सुन्हरी हुरूफ़ से लिखने के क़ाबिल है। शाहे मिस्र बोला : ऐ सुवाल करने वाले ! येह बताओ येह बादशाही किस हस्ती ने अ़त़ा की ? यक़ीनन मदीने वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ही इनायत फ़रमाई है। लिहाज़ा शाही ताजो लिबास के साथ ह़ाज़िर हुवा हूं। ताकि देने वाला अपनी मुबारक आंखों से देख ले। (बारह तक़रीरें, स. 204 बित्तग़य्युर)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी बे हि़साब मग़फ़िरत हो। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

किस चीज़ की कमी है मौला तेरी गली में

दुन्या तेरी गली में उ़क़्बा तेरी गली में

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अज़ाने बिलाल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़शिके़ बे मिसाल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का नाम ज़बान पर आता है तो बे साख़्ता एक सर ता पा आ़शिके़ रसूल हस्ती का तसव्वुर क़ाइम हो जाता है ईमान लाने और ग़ुलामी से आज़ादी पाने के बा'द आ़शिके़ बे मिसाल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी ज़िन्दगी के ह़सीन अय्याम सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में गुज़ारे लेकिन विसाले ज़ाहिरी के बा'द हिज्रे रसूल की ताब न ला कर मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا से हिजरत कर के मुल्के शाम के अ़लाके़ "दारय्या" में सुकूनत इख़्तियार फ़रमाई। कुछ अ़र्सा गुज़रने के बा'द एक रात ख़्वाब में सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदारे फ़ैज़ आसार से मुशर्रफ़ हुए, लब्हाए मुबारका को जुम्बिश हुई, रह़मतो मह़ब्बत के फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : "مَاھٰذِہِ الْجَفْوَۃُ یَا بِلَال! اَمَا آنَ لَکَ اَنْ تَزُوْرَنِی یَا بِلَال!" या'नी ऐ बिलाल !

www.dawateislami.net

येह क्या जफ़ा है ! क्या अभी वोह वक़्त न आया कि तुम मेरी ज़ियारत के लिये ह़ाज़िरी दो।'' आ़शिक़े बे मिसाल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ बेदार होते ही हुक्मे सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'मील में **मदीनए मुनव्वरा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا की जानिब रवाना हो गए और सफ़र करते हुए मर्कज़े उ़श्शाक़ दयारे मदीना की नूरानी और पुरकैफ़ फ़ज़ाओं में दाख़िल हो गए, बेताबाना मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हुए, ज़ब्त़ के बन्धन टूट गए, आंखों से आंसूओं का तार बन्ध गया और अपना चेहरा मज़ारे पाक की मुबारक ख़ाक पर मस करने लगे। ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की आमद की ख़बर सुन कर गुलशने रिसालत के दोनों महकते फूल सय्यिदैना ह़सनैने करीमैन (या'नी ह़ज़राते सय्यिदैना ह़सनो ह़ुसैन) رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا भी तशरीफ़ ले आए। ह़ज़रते सय्यिदुना **बिलाल** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने बे साख़्ता दोनों शहज़ादों को अपने साथ लिपटा लिया और प्यार करने लगे। शहज़ादों ने फ़रमाइश की : **ऐ बिलाल !** हमें एक बार फिर वोह **अज़ान** सुना दीजिये जो आप नानाजान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में दिया करते थे। अब इन्कार की गुंजाइश कहां थी ! चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **बिलाल** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की छत पर उस ह़िस्से में तशरीफ़ ले गए जहां वोह हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में **अज़ान** दिया करते थे। जब ह़ज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने "**अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर**" से **अज़ान** का आग़ाज़ फ़रमाया तो मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में हलबली मच गई और लोग बेताब हो गए, जब "اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ" के कलिमात कहे तो हर त़रफ़ आहो बुका का शोर बरपा हो गया, फिर जब इस लफ़्ज़ पर पहुंचे : "اَشْھَدُاَنَّ مُحَمَّدًارَّسُوْلُ اللّٰہ" तो लोग बेताबाना एक दूसरे से पूछने लगे : "क्या सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मज़ारे पुर अन्वार से बाहर तशरीफ़ ले आए हैं ?" सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में उस दिन से ज़ियादा कभी गिर्या व ज़ारी नहीं हुई । इस वाक़िए के बा'द आ़शिक़े बे मिसाल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ता दमे ह़यात साल में एक मरतबा मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا ह़ाज़िर होते और **अज़ान** दिया करते थे ।

(تاریخ دِمَشق ج۷ص۱۳۷ وفتاوٰی رضویہ مُخرجہ ج۱۰ ص۷۲۰مُلَخّصًا)

जाहो जलाल दो न ही मालो मनाल दो
सोज़े बिलाल बस मेरी झोली में डाल दो

(वसाइले बख़्शिश, स. 290)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़र्नात़ा का मायूसुल इलाज मरीज़

अबू मुह़म्मद इश्बीली अपना एक वाक़िआ़ बयान फ़रमाते हैं कि ग़र्नात़ा में एक ऐसे बीमार के हां ठहरे जो त़बीबों की त़रफ़ से ला इलाज क़रार दिया जा चुका था । उस बीमार के एक ख़ादिम

इब्ने अबी ख़िसाल ने सरकारे आ़लम मदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे गोहर बार में अ़रीज़ा लिखा जिस में उस ने अपने आक़ा की बीमारी का ज़िक्र किया था और दरख़्वास्त की थी कि उसे शिफ़ा नसीब हो । अबू मुह़म्मद फ़रमाते हैं : वोह अ़रीज़ा लिये एक ज़ाइरे मदीना ग़र्नात़ा से मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا ह़ाज़िर हुवा, उस ने जूंही येह ख़त़ दरबारे रिसालत में पढ़ा बीमार को ग़र्नात़ा में शिफ़ा मिल गई ।

(वफ़ाउल वफ़ा, जि. 2, स. 1387 मुलख़्ख़सन)

फ़क़त़ अमराज़े जिस्मानी की ही करता नहीं फ़रियाद
गुनाहों के मरज़ से भी शिफ़ा दो या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 551)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ज़म ज़म का बा कमाल साक़ी

शैख़ अबू इब्राहीम वर्राद علیہ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡجَوَاد फ़रमाते हैं : मैं ने एक मरतबा **ह़ज** व ज़ियारत की सआ़दत पाई, ज़ादे क़ाफ़िला की क़िल्लत (या'नी अख़राजात की कमी) के सबब क़ाफ़िले वाले मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में मुझे अकेला छोड़ कर रवाना हो गए। मैं ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर फ़रियाद की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे रुफ़क़ा मुझे तन्हा छोड़ कर जा चुके हैं ।" जब सोया तो ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से शरफ़याब हुवा, आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मक्का शरीफ़ जाओ, वहां

www.dawateislami.net

एक शख़्स **ज़म ज़म** के कुंवें पर पानी खींच खींच कर लोगों को पिला रहा होगा, उस से कहना, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया है कि मुझे मेरे घर तक पहुंचा दो ।'' मैं ह़स्बे इर्शाद मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا पहुंचा और **ज़म ज़म** शरीफ़ के कुंवें पर गया, जहां एक शख़्स पानी खींच रहा था, इस से पहले कि मैं कुछ कहूं, वोह कहने लगा : ''ठहरो ! मैं ज़रा लोगों को पानी पिला लूं ।'' जब वोह फ़ारिग़ हुवा तो रात हो चुकी थी । उस ने कहा : ''बैतुल्लाह शरीफ़ का त़वाफ़ कर लो फिर मेरे साथ मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا के बालाई (या'नी ऊंचाई वाले) ह़िस्से की त़रफ़ चलो'' चुनान्चे मैं त़वाफ़ से मुशर्रफ़ होने के बा'द उस के साथ उस के क़दम ब क़दम चल पड़ा । जब सुब्ह़ क़रीब हुई तो मैं ने ख़ुद को ऐसी वादी में पाया जिस में बहुत घने दरख़्त और पानी के चश्मे थे, मैं ने सोचा येह वादी तो मेरी वादी ''शफ़शावह'' जैसी लगती है । जब अच्छी त़रह़ सपेदए सह़र (या'नी फ़ज्र का उजाला) नुमूदार हुवा और मैं ने ग़ौर से देखा तो वाक़ेई वोह वादी ''**शफ़शावह**'' ही थी । मैं ख़ुशी ख़ुशी अपने अहलो इयाल के पास पहुंचा और अपने मकान पहुंचने की दास्ताने करामत निशान सुना कर सब को वर्त़ए ह़ैरत में डाल दिया ! लोगों ने मेरे क़ाफ़िले के मुतअ़ल्लिक़ दर्याफ़्त किया । मैं ने उन्हें बताया कि वोह तो मुझे मुफ़्लिसो नादार समझ कर मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا में अकेला छोड़ कर सूए वत़न रवाना हो गए थे । कुछ लोगों ने मेरी बात को दुरुस्त तस्लीम किया और बा'ज़ ने मुझे झुटलाया, चन्द माह

www.dawateislami.net

गुज़रे तो मेरा क़ाफ़िला आ पहुंचा और लोग ह़क़ीक़ते ह़ाल से वाक़िफ़ हुए और اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ सब ने मुझे सच्चा मान लिया। (شواھد الحق ص۲۲۹) (चूंकि पहले ज़माने में ऊंटों और ख़च्चरों वग़ैरा पर सफ़र हुवा करता था, ग़ालिबन इसी वजह से क़ाफ़िला कुछ महीनों के बा'द पहुंचा।)

***अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तिन्का भी हमारे तो हिलाए नहीं हिलता
तुम चाहो तो हो जाए अभी कोहे मिह़न फूल

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

तीन रुपिया मदीना......तीन रुपिया मुल्तान

येह ह़िकायत किसी ने मुझे (सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को) काफ़ी अ़र्सा क़ब्ल सुनाई थी अपनी याददाश्त के मुत़ाबिक़ अपने अल्फ़ाज़ में बयान करने की सअ्य करता हूं : ह़ाजियों का एक क़ाफ़िला मदीनतुल औलिया से मदीनतुल मुस्त़फ़ा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا चला, उस में **एक मदीने का दीवाना** भी शामिल था। ह़ज्जे बैतुल्लाह और ह़ाज़िरिये मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا से फ़राग़त के बा'द जब सब मुल्तान शरीफ़ पहुंच गए। एक ह़ाजी ने दीवाने को छेड़ते हुए कहा : तुझे बारगाहे रिसालत से कोई सनद भी अ़त़ा हुई या नहीं ? वोह बोला : नहीं। उस ह़ाजी ने अपने ही हाथों लिखी हुई एक चिठ्ठी दीवाने को दिखाते हुए कहा : देख ! मुझे रौज़ए

www.dawateislami.net

अन्वर पर येह सनद मिली है ! चिठ्ठी में लिखा था : "तेरी मग़फ़िरत कर दी गई है।" **दीवाना** येह पढ़ कर बे क़रार हो गया, उस ने रोना धोना मचा दिया और येह कहते हुए चल पड़ा : मैं भी अपने प्यारे **आक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मग़फ़िरत की सनद लूंगा' गिरता पड़ता जब रोड़ पर आया तो एक बस खड़ी थी और कन्डक्टर आवाज़ लगा रहा था : "**तीन रूपिया मदीना ! तीन रूपिया मदीना !!**" दीवाना लपक कर बस में सुवार हो गया, तीन रुपिये अदा किये और बस चल पड़ी। कुछ ही देर बा'द कन्डक्टर ने सदा लगाई : मदीना आ गया !! मदीना आ गया !! दीवाना बस से उतर गया, ! سُبْحٰنَ الله वोह सचमुच मदीने ही में था, और उस की निगाहों के सामने **सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद** अपने जल्वे लुटा रहा था। उस ने बेताबी के साथ क़दम आगे बढ़ाए, मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में दाख़िल हुवा और सुन्हरी जालियों के रू बरू हाज़िर हो गया, उस के सीने में थमा हुवा तूफ़ान आंखों के रास्ते उमंडने लगा, बा'दे अ़र्ज़े सलाम उस ने बरसती हुई आंखों से मग़फ़िरत की सनद की इल्तिजाए शौक़ पेश कर दी। नागाह एक पर्चा उस के सीने पर गिरा, बे क़रार हो कर उस ने पढ़ा तो लिखा था : "**तेरी मग़फ़िरत कर दी गई है।**" उस ने वोह काग़ज़ एह़तियात़ से जैब में रखा और ख़ुश ख़ुश बाहर निकला। वोही बस नज़र आई। कन्डक्टर सदाएं लगा रहा था। "**तीन रुपिया, मदीनतुल औलिया ! तीन रुपिया मदीनतुल औलिया !!**" दीवाना बस में सुवार हो गया, तीन

रुपिये अदा किये बस चल पड़ी, कुछ ही देर के बा'द कन्डक्टर ने आवाज़ लगाई : "**मदीनतुल औलिया आ गया ! मदीनतुल औलिया आ गया !!**" दीवाना उतरा और अपने क़ाफ़िले वालों के पास आ पहुंचा, चूंकि येह सब चन्द लम्हों में ही हो गया था लिहाज़ा तमाम **हुज्जाज** अभी वहीं मौजूद थे, उन्हों ने जब दीवाने के पास "सनद" देखी तो हैरान रह गए, उन्हों ने दीवाने का बड़ा एह्तिराम किया, खुसूसन जिस हाजी ने दीवाने के साथ मज़ाक़ किया था, वोह फूट फूट कर रोने लगा और उस ने अपने जुर्म से तौबा की, दीवाने से भी मुआफ़ी मांगी। और अ़ज़्म किया कि जब तक "सनद" अ़ता न हुई **हर साल ह़ज** करूंगा और हाज़िरे दरबारे मदीना हो कर "सनदे मग़फ़िरत" की ख़ैरात मांगता रहूंगा। मुझे अपने करीम आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से उम्मीदे वासिक़ है कि मुझ गुनहगार को मायूस नहीं फ़रमाएंगे। दीवाना अपने आप में न था चन्द ही रोज़ में उस का इन्तिक़ाल हो गया। और वोह हाजी अब तक हर साल बराबर हाज़िरिये हरमैने शरीफ़ैन से मुशर्रफ़ हो रहा है।

(ता दमे तह़रीर (8 शव्वालुल मुकर्रम 1433 हि.) वाक़िआ सुने कमो बेश 35 साल का अ़र्सा गुज़र चुका है, फ़िलहाल उस हाजी के अह़वाल मा'लूम नहीं।)

तमन्ना है फ़रमाइये रोज़े मह़शर
येह तेरी रिहाई की चिट्ठी मिली है

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

आक़ा के करम से गुमशुदा बेटा मिल गया

शैख़ अबुल क़ासिम बिन यूसुफ़ इस्कन्दरानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं : मैं मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में था, एक आ़शिक़े रसूल को देखा कि वोह क़ब्रे अन्वर के पास कुछ इस त़रह़ से फ़रियाद कर रहा है : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं आप का वसीला पकड़ता हूं ताकि मेरा बेटा मुझे वापस मिल जाए ।" मेरे इस्तिफ़्सार पर उस ने बताया : "जिद्दा शरीफ़ से आते हुए मैं क़ज़ाए ह़ाजत के लिये गया इसी अस्ना में मेरा बेटा ला पता हो गया ।" चन्द साल बा'द वोह शख़्स मुझे मिस्र में मिला तो मैं ने उस के बेटे के बारे में दर्याफ़्त किया । उस ने बताया : "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मुझे मेरा बेटा मिल गया था, हुवा यूं था कि एक क़बीले ने उसे ज़बरदस्ती अपना ग़ुलाम बना कर ऊंट चराने पर लगा दिया था । उसी क़बीले की एक आ़शिक़े रसूल और नेक सीरत ख़ातून ने ख़्वाब में बह़रो बर के बादशाह, दो आ़लम के शहनशाह, उम्मत के ख़ैर ख़्वाह, आमिना के मेहरो माह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से कुछ यूं फ़रमाया : "मिस्री नौजवान को आज़ाद करवा कर उस के घर भेज दो ।" चुनान्चे उस आ़शिक़े रसूल ख़ातून की सिफ़ारिश पर मेरे बेटे को आज़ाद कर दिया गया ।

(شواهد الحق فی الاستغاثة بسيدالخلق ص ٢٣٠ مُلَخَّصًا)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो । اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واله وسلّم

www.dawateislami.net

वल्लाह वोह सुन लेंगे फ़रियाद को पहुंचेंगे

इतना भी तो हो कोई जो "आह" करे दिल से

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आक़ा को पुकारने से कमज़ोरी दूर हो जाती

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन सालिम सिजिल्मासी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं मोह़तरम नबी, मक्की मदनी, मह़बूबे रब्बे ग़नी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर की ज़ियारत की निय्यत से पैदल चलने वाले क़ाफ़िलए मदीना का मुसाफ़िर बन गया। दौराने सफ़र जब कभी कमज़ोरी मह़सूस होती तो अ़र्ज़ करता : **اَنَا فِىْ ضِيَافَتِكَ يَارَسُوْلَ اللّٰه** या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं आप की ज़ियाफ़त (या'नी मेहमानी) में हूं तो वोह नातुवानी (या'नी कमज़ोरी) फ़ौरन ज़ाइल हो जाती।

(शवाहिदुल ह़क़्क़, स. 231)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِىِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

थका मान्दा है वोह जो पाऊं अपने तोड़ कर बैठा

वोही पहुंचा हुवा ठहरा जो पहुंचा कूए जानां में

(ज़ौके़ ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

गुम्बदे ख़ज़रा देख कर दम निकल गया !

मौलाना हाफ़िज़ बसीरपूरी अपने सफ़रनामए हज में लिखते हैं : सि. 1972 ई. में मुझे मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में रमज़ानुल मुबारक का महीना नसीब हुवा । ग़ालिबन रमज़ानुल मुबारक का दूसरा जुमुआ था, एक आशिक़े रसूल अपने साथियों को मजबूर कर के मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا से क़ब्ल अज़ वक़्त ही मदीनए तृय्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا ले आया और आते ही सामान से बे परवाह हो कर आक़ाए दो जहां, सुल्ताने कौनो मकां صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे अक़दस में हाज़िर हो गया । सलाम अ़र्ज़ करने के बा'द दो नफ़्ल अदा किये और बाबे जिब्रील से बाहर निकला, पलट कर **गुम्बदे ख़ज़रा** पर नज़र डाली और ग़श खा कर गिर पड़ा, मुंह से ख़ून बहने लगा और तड़पे बिग़ैर ठन्डा हो गया । (अन्वारे क़ुत्बे मदीना, स. 62)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़फ़िरत हो । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰی عليه واٰله وسلّم

काश ! गुम्बदे ख़ज़रा पर निगाह पड़ते ही
खा के ग़श में गिर जाता फिर तड़प के मर जाता

(वसाइले बख़्शिश, स. 410)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

क़र्ज़ अदा करवा दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुन्कदिर عليه رَحمةُ اللّٰهِ المُقتَدِر के साहिबज़ादे बयान करते हैं कि **यमन** के एक आदमी ने मेरे वालिद साहिब के पास 80 दीनार रखवाते हुए अ़र्ज़ की : "अगर ज़रूरत पड़े तो इन्हें ख़र्च कर लेना, जब वापस आऊं तो मुझे अदा कर देना" और **वोह** ख़ुद जिहाद के लिये चला गया। उस के जाने के बा'द मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में सख़्त **क़ह़त़** और ख़ुश्क साली ने ग़लबा किया, वालिद साहिब رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने वोह दीनार लोगों में तक़्सीम कर दिये। थोड़ा ही अ़र्सा गुज़रा था कि वोह शख़्स वापस आ गया और उस ने अपनी रक़म त़लब की। वालिदे मोह़तरम ने कहा : "कल तशरीफ़ लाइये।" और ख़ुद उस रात मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ में ठहरे रहे, कभी मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार पर ह़ाज़िर होते और सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की निगाहे करम बार के त़लबगार होते और कभी मिम्बरे अत़्हर के पास आ कर दुआ़ व इल्तिजा करते, ह़त्ता कि सपैदए सह़र नुमूदार होने लगा, धुंदलके में एक शख़्स ने थेली आगे बढ़ाते हुए कहा : "ऐ मुह़म्मद बिन मुन्कदिर ! येह लीजिये।" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने हाथ बढ़ा कर थेली ले ली, खोल कर देखा तो उस में 80 दीनार थे। सुब्ह़ हुई तो रक़म रखवाने वाला शख़्स आ गया, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه

ने 80 दीनार उस के ह़वाले कर दिये। यूं आप رَحْمَةُاللهِ تَعالٰی عَلَيْه इस बारे क़र्ज़ से नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की निगाहे करम से सबुकदोश हो गए। (शवाहिदुल ह़क़्क़, स. 227)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰی عليه واٰله وسلَّم

हर त़रफ़ मदीने में भीड़ है फ़क़ीरों की

एक देने वाला है कुल जहां सुवाली है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

तुर्क मरीज़ का इलाज

मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا में एक शख़्स को देखा गया जो ज़ख़्मों से चूर चूर था, मा'लूम हुवा वोह तुर्की का बाशिन्दा है और 15 साल से बीमार है, तुर्की में इलाज नाकाम रहा, किसी ने मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا की **ख़ाके शिफ़ा** इस्ति'माल करने का मश्वरा दिया, तुर्क मरीज़ ने हिदायत पर अ़मल किया, जो मरज़ पन्दरह साल में ठीक न हुवा, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ वोह एक साल में दो ह़िस्सा ख़त्म हो गया। वोह तुर्क रो रो कर अपना दर्दनाक वाक़िया सुनाया करता और **ख़ाके मदीना** के गुन गाया करता।

(मदीनतुर्रसूल, स. 133 मुलख़्ख़सन)

न हो आराम जिस बीमार को सारे ज़माने से

उठा ले जाए थोड़ी ख़ाक उन के आस्ताने से

(ज़ौके़ ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللهُ تعالٰى على محمّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! बेशक ख़ाके मदीना में **अल्लाह** तआ़ला ने शिफ़ा रखी है, अगर ए'तिक़ाद सादिक़ हो तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मायूसी नहीं होगी।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيمًا की मिट्टी में शिफ़ा होने की बिशारतें अह़ादीसे मुबारका में मौजूद हैं। चुनान्चे **तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों :

﴾1﴿ غُبَارُ الْمَدِيْنَةِ شِفَاءٌ مِّنَ الْجُذَامِ या'नी **ख़ाके मदीना** में जुज़ाम से शिफ़ा है। (جامع صغیر ص۳۵۵ حدیث ۵۷۵۳) ह़ज़रते अ़ल्लामा क़स्त़लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फरमाते हैं : मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيمًا की एक खुसूसिय्यत येह भी है कि इस की मुबारक ख़ाक कोढ़ और सफ़ेद दाग़ की बीमारियों बल्कि हर बीमारी से शिफ़ा है। (اَلْمَواهِبُ اللَّدُنِّيَّة ج۳ ص۴۳۱)

﴾2﴿ غُبَارُ الْمَدِيْنَةِ يُبْرِئُ الْجُذَامَ या'नी **ख़ाके मदीना** जुज़ाम को अच्छा कर देती है। (جامع صغير ص ٣٥٥ حديث ٥٧٥٤)

﴾3﴿ وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِيَدِهٖ اِنَّ فِیْ غُبَارِهَا شِفَاءً مِّنْ كُلِّ دَاءٍ उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है बेशक **ख़ाके मदीना** हर बीमारी की शिफ़ा है। (الترغيب والترهيب ج ٢ ص١٢٢ حديث١٨٨٥)

मदीने की मिट्टी और फलों में शिफ़ा

जज़्बुल कुलूब में है **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की **मिट्टी** और **फलों** में शिफ़ा रखी है और कई अह़ादीसे मुबारका में आया है, **ख़ाके मदीना में हर मरज़ से शिफ़ा है** और बा'ज़ अह़ादीसे मुबारका में مِنَ الْجُذَامِ وَ الْبَرَص या'नी कोढ़ और फुलबहरी (या'नी बरस) से शिफ़ा का ज़िक्र है और बा'ज़ "अख़्बार" में मदीने के एक ख़ास मक़ाम सुऐब (अ़वाम इस जगह को "ख़ाके शिफ़ा" बोलते हैं) का तज़किरा है बा'ज़ रिवायात में है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बा'ज़ सह़ाबा को हुक्म फ़रमाया कि वोह इस ख़ाक से **बुख़ार** का इलाज करें। बुज़ुर्गों से इस ख़ास मक़ाम "सुऐब" की ख़ाक मुबारक से इलाज की **ह़िकायात** भी मिलती है। (जज़्बुल कुलूब, स. 27 मुलख़्ख़सन)

साल भर का बुख़ार एक दिन में जाता रहा

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मजदुद्दीन फ़िरोज़ाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : मेरा गुलाम साल भर से **बुख़ार** में मुब्तला था, मैं ने (मक़ामे सुऐब (या'नी ख़ाके शिफ़ा) से) ख़ाके मदीना ली और पानी में (क़लील मिक़दार में) घोल कर पिलाई, اَلْحَمْدُ لِلّٰه उसी दिन शिफ़ायाब हो गया। (ऐज़न)

www.dawateislami.net

ख़ाके शिफ़ा से वरम का इलाज

शैख़े मोहक़्क़िक़, ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मोह़द्दिस देहल्वी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : जिन दिनों मेरी मदीनतुल मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में ह़ाज़िरी थी, किसी मरज़ के सबब मेरा पाऊं सूज गया, त़बीबों ने मिल कर उसे मोहलिक आ़रिज़ा (या'नी हलाक कर देने वाला मरज़) क़रार देते हुए इलाज से हाथ रोक दिया । मैं ने (मक़ामे सुऐ़ब से) ख़ाके पाक ली और इस्ति'माल शुरूअ़ किया اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ थोड़े ही दिनों मे बड़ी आसानी से वरम (या'नी सूजुन) से नजात मिल गई । (ऐज़न) आ़शिक़ाने रसूल ''मक़ामे सुऐ़ब'' को ''**ख़ाके शिफ़ा**'' के नाम से जानते हैं, अफ़्सोस ! वोह मुबारक जगह अब छुपा दी गई है, बसा अवक़ात उ़श्शाक़ खोद कर ''ख़ाके शिफ़ा'' ह़ासिल कर लेते हैं, मगर इन्तिज़ामिया डामर वग़ैरा डाल कर फिर से बन्द कर देती है ।

मदीने की मिट्टी ज़रा सी उठा कर

पियो घोल कर हर मरज़ की दवा है

(वसाइले बख़्शिश, स. 347)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

दुन्या के लिये माल जम्अ़ करने वाले बे अ़क़्ल हैं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** दुन्या उस का घर है जिस का कोई घर न हो और उस का माल है जिस का कोई माल न हो और इस के लिये वोह जम्अ़ करता है जिस में अ़क़्ल न हो।

M.R.P. ₹ 00/-

Maktabatul Madina
Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Teen koniya Baghicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net